



विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2566, ज्येष्ठ पूर्णिमा (ऑनलाइन), 14 जून, 2022, वर्ष 51, अंक 12

E-NEWS LETTER वार्षिक शुल्क रु. 100/-

बुद्ध-वाणी

सेखो पथविं विचेस्सति, यमलोकञ्च इमं सदेवकं।

सेखो धम्मपदं सुदेसितं, कुसलो पुप्फमिव पचेस्सति ॥

– धम्मपदपालि 45, पुप्फवग्गो.

शैक्ष्य (निर्वाण की खोज में लगा हुआ व्यक्ति) ही पृथ्वी पर, और

देवताओं सहित इस यमलोक पर, विजय पायगा। शैक्ष्य (ही) भली

प्रकार उपदिष्ट धर्म के पदों का, पुष्प की भांति चयन करेगा।

धम्मगिरिः स्मरणीय दस वर्ष

International Vipassana Newsletter, Vol. 13, No. 4 (December 1986 से साभार)



(1974)

ऐसी थी धम्मगिरि जब पुराने मकानों के साथ खरीदी गयी। (पश्चिम दिशा से हवाई दृश्य)



(1974)

प्रारंभिक साधक, विद्यापीठ का निर्माण-कार्य आरंभ होने के पूर्व पुराने बंगले के बाहर खुले में साधना करते हुए।

(1976)

प्रारंभिक भोजनालय, रसोईघर और धम्म-कक्ष के आगे कुछ सामूहिक शयन-कक्ष भी दिखायी दे रहे हैं।



(1976)

अकादमी के प्रारंभिक ध्यान-कक्ष में साधना-शिविर, जो भोजनालय के बगल में था।



(1978)

पगोडा की नींव खोदने पर पूज्य गुरुजी एवं माताजी ने ध्यान करके भूमि को मैत्री तरंगों से पूरित किया। (साथ में कुछ साधक भी ध्यान करते हुए।)



(1979)

भारत में प्रथम पगोडा के उद्घाटन समारोह में पूज्य गुरुजी का सार्वजनिक प्रवचन, जिसमें गांव के लोग भी आमंत्रित थे।

(1979)

उद्घाटन की रात सुनहरे रंगों एवं छत्रों से सुसज्जित पगोडा तीव्र रोशनी से जगमगा रहा है।



(1983)

पगोडा से सट कर बने नवनिर्मित साधना-कक्ष के बाहर पूज्य गुरुजी एवं माताजी टहलते व मैत्री देते हुए।



यह शरद ऋतु धम्मगिरि के प्रथम औपचारिक शिविर की दसवीं वर्षगांठ को चिह्नित करती है। अक्टूबर 1976 में विपश्यना विश्व विद्यापीठ ने आम जनता के लाभार्थ प्रथम दस दिवसीय शिविर के रूप में धर्म का द्वार खोला। धम्मगिरि का उद्घाटन-शिविर भारत में धर्म के प्रसार में एक महत्त्वपूर्ण कदम था। गोयन्काजी ने 1969 से ही भारत में अस्थायी सुविधाओं का उपयोग करते हुए तीर्थयात्रियों के विश्राम गृह (धर्मशालाएं), मंदिर, मस्जिद, चर्च, मठ,

स्कूल, होटल इत्यादि; यहां तक कि व्यक्तिगत निवासों में भी शिविर संचालित करने आरंभ किये थे। ये “जिप्सी कैंप” धर्म के बीज को व्यापक रूप से बिखेरने में बहुमूल्य थे, परंतु विपश्यना साधना के अभ्यास के लिए एक विशेष स्थान का होना अधिक आवश्यक था। सत्तर के प्रारंभिक दशक में जब श्री गोयन्काजी के कुछ शिष्यों ने बर्मा में सयाजी ऊ बा खिन से भेंट की, तब सयाजी ने भारत में विपश्यना केंद्र स्थापित करने के महत्त्व पर जोर दिया था।

यद्यपि इसमें आर्थिक कठिनाइयों के अतिरिक्त कुछ अन्य दुर्जेय बाधाएं भी थीं। एक ओर जहां भारत में बुद्ध को बहुत सम्मान दिया जाता है, वहीं 'बौद्ध धर्म' को अधिकांशतः संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। ऐसे में यदि बुद्ध की शिक्षा के प्रसार के लिए किसी केंद्र की स्थापना की गई, तो इसे एक सांप्रदायिक संस्था के रूप में देखे जाने की संभावना अधिक थी और तब इसका आकर्षण केवल भारत के अल्पसंख्यक बौद्ध लोगों तक ही सीमित हो जाता। इस खतरे से अवगत श्री गौयन्काजी ने अपने प्रवचनों में विपश्यना साधना विधि को एक गैर-सांप्रदायिक और व्यावहारिक विद्या बताया जो सार्वजनीन प्राकृतिक नियमों (धर्मों) पर आधारित है। उन्होंने स्पष्ट किया कि धम्मगिरि किसी सांप्रदायिक संस्था या ऐसे किसी समूह की संपत्ति नहीं, बल्कि उन सभी के लाभ के लिए है जो अपने मानसिक विकारों और सभी प्रकार के दुःखों से छुटकारा पाना चाहते हैं।

एक और समस्या यह थी कि भारत में लोग दान की शुद्धता से अनभिज्ञ थे। जिप्सी शिविरों में साधकों को उनके रहने-खाने की व्यवस्था करनी पड़ती है इसलिए उनका भुगतान होना ही चाहिए। परिस्थितियों को देखते हुए, ऐसी व्यवस्था करना गलत भी नहीं था। लेकिन गौयन्काजी को लगा कि ऐसा करने से विपश्यना केवल धनियों तक सीमित हो जायगी। किसी विपश्यना केंद्र पर तो इस आधार पर काम हो ही नहीं सकता। उन्होंने सयाजी की नीति को याद किया, जिसमें सयाजी ने लिखा था, "मेरे शिष्यों द्वारा कोई प्रवेश या सदस्यता शुल्क या निश्चित दानराशि देय नहीं होनी चाहिए।... हमें केवल विपश्यना साधना से लाभान्वित हुए साधकों की शुद्ध दान-चेतना से दिये गये दान को ही स्वीकार करना चाहिए।... यदि कोई अपनी ही भांति अन्य लोगों को भी धर्म-साधना का लाभ लेने में मदद करना चाहता है और यदि वह समझ गया है कि जैसे इस विद्या से मुझे लाभ मिला वैसे ही अन्य लोग भी लाभान्वित हों, और अधिक से अधिक लोगों को दीर्घकाल तक इसका वास्तविक लाभ मिलता रहे तो उसे धर्म के प्रचार के लिए, बेहतर सुविधाओं का दान देने से आप रोक नहीं सकते, अर्थात् उसका दान स्वीकार करना ही चाहिए।"

इस प्रकार एक विपश्यना केंद्र की स्थापना, केवल सही भूमि का चुनाव करना और उसकी खरीद के लिए पैसों का भुगतान करना ही नहीं था बल्कि उसके लिए उचित आधार होना चाहिए कि विपश्यना साधना के लाभ को लोग स्वयं अनुभव करें और अन्य लोग भी ऐसा अनुभव कर सकें, ऐसी भावना जाग्रत हो। किसी केंद्र की सफलता के लिए इसका समर्थन करने वाले तथा वहां आने वाले सभी लोगों को इसे समझना चाहिए।

श्री गौयन्काजी को पूरा विश्वास था कि धर्म इन बाधाओं को स्वतः दूर करेगा। उन्होंने उनके आचार्य के निर्देशों के आधार पर केंद्र स्थापित करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम किया, जिससे धर्म न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में फैल सके।

जैसे-जैसे यह महती परियोजना विकसित हुई, कई विपश्यी साधक इसमें शामिल होते गए और समय के साथ हजारों साधक ध्यान करने और केंद्र की स्थापना में अपना सहयोग देने के लिए धम्मगिरि और इसकी नीतियों से जुड़ते गये। गौयन्काजी के उन सहयोगी साधकों के अपने शब्दों में धम्मगिरि के प्रारंभिक वर्षों की कहानी इस प्रकार है:—

धम्मगिरि का आविर्भाव

दिसंबर 1973 में मैंने इगतपुरी से 45 किमी. दूर देवलाली (नाशिक) में लगे विपश्यना शिविर में पहली बार भाग लिया। यह शिविर मुझे कुछ कठिन लेकिन बहुत फायदेमंद लगा। शिविर के अंतिम दिन मुझे संयोग से पता चला कि श्री गौयन्काजी मुंबई क्षेत्र में ध्यान केंद्र के लिए एक जगह की तलाश कर रहे हैं। मेरे मन में तुरंत विचार आया कि ऐसे केंद्र के लिए इगतपुरी से अधिक उपयुक्त स्थान और कोई हो ही नहीं सकता। मैं जिस नगर (इगतपुरी) में रहता हूँ, वहां बरसात में जैसे पहाड़ों पर से झरने फूटते हैं, वैसे ही यहां से धर्म के अपार झरनों का बहाव होने की संभावना है। मैं श्री गौयन्काजी के पास गया और शिविर समापन के बाद, मुंबई लौटते समय उन्हें अपने घर पर चाय के लिए आमंत्रित किया। मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि इसमें उन्हें पाँच मिनट से अधिक की देरी नहीं होगी, क्योंकि मेरा घर देवलाली से मुंबई जाने वाले मुख्य मार्ग पर ही है। मेरी योजना यह थी कि जब वे मेरे घर आएँ, तब उनसे केंद्र के लिए कुछ एक स्थल दिखाने के बारे में चर्चा करूँ।

श्री गौयन्काजी का जवाब पहले उत्साहजनक नहीं था। उन्होंने पूछा, "अगर मैं रास्ते में हर घर में इस प्रकार रुकता चलूँ तो अपने घर कैसे पहुँचूँगा?" लेकिन जब मैंने साग्रह अनुरोध किया कि मैं पाँच मिनट से अधिक नहीं लगने दूँगा, तब उन्होंने करुणा करके मेरे निमंत्रण को स्वीकार किया। फिर भी मुझे चेतावनी दी, "ख्याल रखना कि पाँच मिनट कहीं पाँच घंटे में नहीं बदल जायँ!"

अब मेरी योजना काम कर गई। इस विचार से मन खुशी से भर गया, लेकिन यह भी डर था कि यह विफल भी हो सकती है। श्री गौयन्काजी आगे न निकल जायँ, इस चिंता में मैं तुरंत अपने घर के लिए निकल जाना चाहता था। वे कार से यात्रा करने वाले थे, जबकि मुझे बस या ट्रेन से यात्रा करनी थी



ऐसी थी धम्मगिरि की जमीन, जब पुराने मकानों के साथ खरीदी गयी, (पश्चिम दिशा से हवाई दृश्य)- जिसमें पुराने मकान दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

जो तुलना में स्वाभाविक रूप से बहुत धीमी होती। दोपहर के भोजन का समय था। मैं भोजन कक्ष में एक साथी साधक श्री रंगीलभाई मेहता को अलविदा कहने के लिए गया, जिन्होंने मुझे शिविर के लिए आते समय लिफ्ट दी थी। मेरी योजना के बारे में सुनकर उन्होंने अपनी सहायता पेश की। उन्होंने कहा “चलो भोजन करते हैं, फिर हम मेरी कार में एक साथ चलेंगे और कुछ ही समय में इगतपुरी पहुँच जायेंगे।” सब कुछ वैसा ही हुआ जैसी मुझे उम्मीद थी। श्री गोयन्काजी के स्वागत के लिए अब हमारे पास काफी समय था। जब हम अपने घर में चाय पी रहे थे, मैंने अनुरोध किया कि अगर वे अभी समय निकाल सकते हों तो मैं उन्हें अपने इस शहर के आसपास ध्यान केंद्र के लिए कुछ संभावित स्थान दिखा सकता हूँ। उन्होंने अपनी सहमति दी और मेहताजी के साथ हम उन स्थलों को देखने के लिए निकल पड़े।

मैंने श्री गोयन्काजी को जो पहले एक या दो स्थल दिखाए, वे स्पष्ट रूप से उन्हें पसंद नहीं आये। मैंने उनसे उपयुक्त स्थान हेतु दिशा-निर्देश मांगा। उन्होंने मुझसे कहा, “मुझे एक ऐसी जगह चाहिए जो शहर के बीच में न हो, लेकिन बहुत दूर भी न हो, जहाँ पानी, बिजली और टेलीफोन के लिए आसानी से कनेक्शन की व्यवस्था की जा सके और जहाँ पहुँचना बहुत मुश्किल न हो।” मैंने तुरंत उन्हें वह स्थल दिखाने को सोचा जहाँ पर अब धम्मगिरि है। उस समय वहाँ तक जाने के लिए कोई पक्की सड़क नहीं थी, लेकिन मेहताजी ने उस ऊबड़-खाबड़ पथरों के टुकड़ों से भरे कच्चे रास्ते पर अपनी गाड़ी को जोखिम में डालने में जरा भी संकोच नहीं किया। जहाँ तक गाड़ी जा सकती थी हम वहाँ तक गए, और फिर गाड़ी से बाहर निकल गए। श्री गोयन्काजी ने अपने चारों ओर ध्यान से देखा और कुछ ही मिनटों में उन्होंने निश्चय कर लिया कि यह वही जगह है जिसकी उन्हें तलाश थी। उसी समय किसी ने जिस पहाड़ी पर हम खड़े

थे उसकी तलहटी में हो रहे एक शवदाह संस्कार की ओर इशारा किया। मुझे चिंता हुई कि श्मशान घाट की निकटता कहीं स्थल के बारे में श्री गोयन्काजी का विचार न बदल दे। लेकिन उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, “अच्छा है! यह स्थान साधकों के मन में अनित्य (नश्वरता) के प्रति जागरूकता को लगातार बनाए रखेगा।”

वहीं, उसी समय मेहताजी ने जमीन खरीदने और ट्रस्ट को दान करने की इच्छा जताई। हमारे जाने से पहले हमने सभी विवरणों को नोट किया ताकि व्यवहार को तेजी से पूर्ण किया जा सके।

इस सब में लगभग पाँच घंटे निकल ही गये—एक कप चाय के लिए काफी लंबा समय! श्री गोयन्काजी का यह संदेह सही निकला कि मेरे घर पर रुकने में पाँच मिनट से अधिक समय लग जायगा, परंतु वह सार्थक हुआ।

वह दिन—16 दिसंबर, 1973—मेरे जीवन का सबसे खुशी का दिन था। तब से मैंने निष्ठापूर्वक विपश्यना का अभ्यास किया है और मुझे जो भी खाली समय मिला उसे धर्म सेवा के लिए दिया है ताकि कई लोग मुक्ति के सुख का अनुभव कर सकें।

—भोजराज संचेती, इगतपुरी, भारत

- श्री गोयन्काजी ने नए केंद्र का नाम “धम्मगिरि” रखा, जिसका अर्थ है - धर्म की पहाड़ी।
- बहुत जल्द यह केंद्र विपश्यना साधकों को आकर्षित करने लगा।

नए केंद्र के प्रारंभिक साधक

मैं 1974 के आरंभ में पहली बार धम्मगिरि आया था। मुंबई के पास एक शिविर के बाद, मैंने श्री गोयन्काजी से नए खरीदे स्थल पर जाने की अनुमति मांगी। उन्होंने मुझे

स्वीकृति देते हुए इगतपुरी में श्री भोजराज से संपर्क करने के लिए कहा। मैं एक दोस्त के साथ वहां गया, और श्री भोजराज हमें पहाड़ी पर ले गए। उस समय इस स्थल पर तीन या चार पुराने घर और आसपास की उजाड़ जमीन शामिल थी। पास के छोटे घर में तब भी किसान का एक परिवार रहता था। श्री भोजराज ने हमारे लिए सबसे पूर्वी मकान खोला, जहां कभी किसान अपनी बकरियां आदि रखते थे। फर्श बकरियों की लेंड (लेंडी) व गोबर से ढका हुआ था और दीवारें वर्षों से खाना पकाने के धुँए से काली हो गयी थीं।



प्रारंभिक साधक, विद्यापीठ का निर्माणकार्य आरंभ होने के पूर्व पुराने बंगले के बाहर खुले में साधना करते हुए।

मैं वहां कुछ सफाई करके लगभग एक सप्ताह रहा और फिर चला गया। कुछ सप्ताह बाद जब मैं वापस आया, तो ग्राहम गैम्बी आ चुके थे। हम दोनों ने मिलकर थोड़ी और सफाई की और वहां ध्यान करना शुरू किया। हमने श्री गोयन्काजी को पत्र लिखा और उनसे पूछा कि जगह में सुधार शुरू करने के लिए हमें क्या काम करना चाहिए—सफाई, पेड़-पौधे लगाना, इत्यादि। उन्होंने जवाब में लिखा, “प्रिय ग्राहम और डॉ. ज्यो, सुखी रहो! ध्यान करो, ध्यान करो, ध्यान करो! अपने आप को निर्मल करो और ध्यान-केंद्र की तरंगों को निर्मल करो। और कुछ मत करो, बस ध्यान करो!” और हमने यही किया।

पहले कुछ बुनियादी सफाई करनी आवश्यक थी ताकि हम जगह का उपयोग कर सकें। हम नीचे के कुएं से पानी की बाल्टियां भर कर ऊपर ले गए और घुटनों पर बैठ कर अपने हाथों से रगड़-रगड़ कर दोनों कमरों की फर्श साफ की।

और फिर हमने दिन में छह से आठ घंटे ध्यान करना शुरू किया। हालांकि पास के मकान में रहने वाले किसानों के शोरगुल की वजह से यह काफी कठिन था। लेकिन कुछ दिनों बाद किसान सपरिवार वहां से चला गया।

फिर एक मूक-बधिर मजदूर सोनू को स्थल पर काम पर रखा गया। जहां हम रह रहे थे, उसने उस मकान की दीवारों की सफेदी करना शुरू कर दिया। सफेदी के लगभग आठ कोट के बाद दीवारें काले रंग से गहरे भूरे, फिर हल्के भूरे से सफेद हो गईं। हम एक कमरे में ध्यान करते और दूसरे कमरे में सोनू सफेदी का काम करता।

एक दिन, जब शायद ध्यान करते-करते मन थोड़ा ऊब गया, तो मैंने सोनू को इशारा किया कि मैं सफेदी करने में उसकी मदद करूंगा। इशारों में उसने मुझसे दृढ़तापूर्वक कहा, “आप ध्यान करो, मैं सफेदी कर दूंगा!” जब बरसात आ गयी तब हम अपने फोम के कुशन को पत्थर के फर्श से कुछ ऊपर, 2” ऊंचे लकड़ी के पट्टे (पाटे) बनवा कर उस पर रखा, क्योंकि ज्यादा नमी के कारण कुशन पूरी तरह से भीग जाते थे। एक बार जब मैं उस पर ध्यान कर रहा था, अपने पैर के बड़े अंगूठे में बहुत तीव्र पीड़ा महसूस की। मैंने सोचा कि यह सिर्फ एक अजीब संस्कार होगा, इसलिए मैंने बस द्रष्टाभाव से ध्यान जारी रखा। थोड़ी देर में फिर वही तीव्र दर्द महसूस किया, और फिर तीसरी बार भी। तब मैंने नीचे देखा तो एक छोटा चूहा मेरे पैर के अंगूठे को काट रहा था और प्रत्येक बार काटने के बाद पायेदार लकड़ी के पट्टे के नीचे छिप जाता था। और चींटियों से बचने के लिए मैं अपने आप को इस तरह से लपेटता था कि चींटियों को मेरी गर्दन या मेरी पलकें या मेरे चेहरे तक पहुँचने में कम से कम 45 मिनट लगें।

श्री गोयन्काजी समय-समय पर, केंद्र की निर्माण योजना और उसकी प्रगति का निरीक्षण करने के लिए आते रहते थे। मुझे याद है जब उन्होंने तय किया था कि पगोड़ा कहां होगा। उस समय शांति पठार [जहां आज पगोड़ा खड़ा है] बिना किसी पेड़ के सिर्फ एक खाली मैदान था। लेकिन वहां हमने एक सामूहिक बैठक की—श्री गोयन्काजी, ग्राहम, नारायण दासरवार और मैं। जब शांति पठार पर चार बोधि वृक्ष लगाए गए तब मैं वहां था। ग्राहम सारनाथ, बोधगया, श्रावस्ती और बर्मा के बोधिवृक्ष की पौधें लेकर आए थे।

भवन निर्माण का काम 1975 में आरंभ हुआ। लगभग 80 लोगों की सुविधाओं को ध्यान में रख कर निर्माण कार्य को ट्रस्ट ने एक ठेकेदार को दे दिया था। उसी समय श्री गोयन्काजी ने धम्मगिरि में रहने वाले पश्चिमी देशों के साधकों को पारंपरिक भारतीय ग्रामीण शैली में फूस की झोपड़ियां बनाने की अनुमति दे दी। निर्माणकार्य शुरू होते ही मजदूरों, उनके परिवारों और जानवरों का उस स्थल पर एक डेरा-सा बन गया था।

—सहायक आचार्य, डॉ. ज्यो पोलैड, कनाडा

प्रारंभ में जब कोई भी निर्माणकार्य नहीं हुआ था, वहां मौजूद हर व्यक्ति दिन में छह से आठ घंटे ध्यान करता था। तब हमें अपने आप को सक्रिय और सजीव रखने के लिए बहुत काम करना पड़ता था; बिजली, पानी या नल आदि की कोई सुविधा नहीं थी। बस रहने के लिए एक खाली मकान था। धम्मगिरि में तब आश्रम जैसा माहौल या सुविधा नहीं थी। यह रेगिस्तान में एक झोपड़ी में रहने जैसा था। हम एक ऐसी सुनसान पहाड़ी पर रह रहे थे, जहां आस-पास चार-छह

आम के पेड़ थे और चारों ओर से हवा के तेज झोंके चलते एवं तेज बारिश होती थी। सांप, गीदड़, गिद्ध और कई तरह के कीड़े-मकोड़े थे। कीड़े वास्तव में जगह के मालिक थे और हम लोग वहां घुसपैठिए थे। भारतीयों के साथ काम करना बहुत अच्छा लगा। सोनू शुरु से वहीं था। उसका एक प्रभावी व्यक्तित्व था। बहरा और गूंगा होने के कारण, उसके संवाद हमेशा सांकेतिक भाषा में होते थे। उसके पास प्रत्येक विदेशी का किसी न किसी शारीरिक विशेषता के अनुसार पहचान करने का एक विशेष तरीका था। ज्यो पोलैंड एक डॉक्टर थे, इसलिए उन्हें बिना बालों वाले, सुई देने वाले के रूप में संकेत किया करता। ग्राहम, गोल चश्मा पहनते थे, इसलिए उनको आंखों के सामने दोनों हाथों से गोल दूरबीन की तरह संकेत किया करता था। एक दिन सोनू छत पर कुछ टाइलें बदल रहा था और कोई दूसरा मजदूर आकर वहां से सीढ़ी उठा कर ले गया। चूंकि सोनू बोल नहीं सकता था, इसलिए वह बेतहाशा इशारा करते हुए वहीं छत पर रह गया। ऐसे में वह बिना आपके पास आए हुए, दूर से आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता तो वह आप के पास छोटे पत्थर या मिट्टी आदि के छोटे टुकड़े उठा कर फेंकता, जिससे आप जान जाते कि सोनू आपको पुकार रहा है।

[सोनू आज भी धम्मगिरि में मुख्य मजदूरों में से एक के रूप में काम कर रहा है, और श्री गोयन्काजी द्वारा ध्यान के प्रारंभिक मार्गदर्शन से लाभान्वित हुआ है। -संपादक]

हम हर रोज इतने व्यस्त रहते थे कि मुझे नहीं लगता कि हम कभी बैठकर यह सोचते कि दस साल बाद यह जगह कैसी होगी? बल्कि हम यही सोचते कि कल हमें क्या करना है? श्री गोयन्काजी हमें प्रगति की खबर से, और यह कैसे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बनेगा, इत्यादि बातों से प्रोत्साहित किया करते थे। लेकिन फिर दिन-प्रतिदिन के कार्य प्राथमिकता ले लेते और हम उनमें जुट जाते थे। जब हमने पेड़-पौधे लगाए तब जानते थे कि एक दिन यह स्थल एक अद्भुत सुंदर वन का रूप ले लेगा। लेकिन वन का विचार करते हुए, आपको यह भी ध्यान रखना होता है कि अभी आपको इस पौधे को पानी देना है और काट-छांट कर उसकी अच्छी देखभाल करनी है आदि। ...

—ल्युक मैथ्यूज, कनाडा

नए केंद्र में मई 1975 में, पुराने साधकों के लिए एक शिविर आयोजित किया गया। यह लेख अमेरिकन ‘विपस्सना न्यूजलेटर’ जुलाई-अगस्त 1975 से लिया गया है:—

केंद्र का पहला शिविर

केंद्र की भूमि के कण-कण में धर्म की तरंगें प्रवाहित

करने के लिए विपश्यना विश्व विद्यापीठ में चार दिनों के पहले ऐतिहासिक शिविर में कुल छिहत्तर साधकों ने भाग लिया। बहुत कम समय में केंद्र की बड़े पैमाने पर मरम्मत और सभी आवश्यक सुविधाएं जुटाने- जैसे बिजली, अस्थायी धम्म हॉल, डाइनिंग टेंट और स्नानघर आदि की व्यवस्था की गई।

स्वाभाविक रूप से कई प्रारंभिक कठिनाइयां थीं जो जल्द ही दूर कर ली गयीं। एक नलकूप की खुदाई आरंभ की गई, परंतु असफल रही। अतः टैंकर से पानी मँगवाना पड़ा। भीषण गर्मी में शिविर बड़ा कठिन रहा लेकिन अद्भुत अनुभव वाला सिद्ध हुआ। श्री गोयन्काजी ने लगभग सभी समय साधकों के साथ धम्म हॉल में ध्यान किया।

जिस रात पहला सामूहिक मैत्री सत्र आयोजित किया गया, श्री गोयन्काजी ने केंद्र की भूमि पर रहने वाले सभी प्राणियों को विशेष मैत्री दी। उन्होंने घोषणा की कि धर्म के वातावरण में, अब से किसी भी प्राणी को अपने जीवन के लिए भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। कोई उन्हें नहीं मारेगा और न ही उन्हें मारने का आदेश देगा आदि...।



पगोडा की नींव भरते समय पूज्य गुरुजी एवं माताजी ने भूमि को मैत्री तरंगों से पूरित करके कंकरीट डाला। (कुछ साधक/ट्रस्टी उनकी सहायता करते हुए।)

शिविर के दौरान श्री गोयन्काजी ने भूमि के सभी भागों में घूम कर सावधानीपूर्वक जांच की और निर्माणकार्य की योजनानुसार भावी इमारतों के स्थलों का निरीक्षण किया कि कहां पर रसोईघर, भोजनालय एवं धम्म-कक्ष होगा और कहां पर निवासादि के कक्ष और शौचालय आदि होंगे। ...

धर्म एक अमूल्य उपहार है, यह स्पष्ट करने के लिए श्री गोयन्काजी ने केंद्र में भोजन और आवास के खर्च को जुटाने के लिए एक नई व्यवस्था की भी घोषणा की। भविष्य में साधक अपने भोजन और अन्य खर्चों के लिए भुगतान नहीं करेंगे, बल्कि अपनी क्षमता के अनुसार केंद्र में आने वाले भावी साधकों के प्रति मंगल भावना से स्वैच्छिक दान दे सकते हैं। इस तरह वे धर्म से प्राप्त हुई अपनी सुख-शांति दूसरों के साथ बाँट सकेंगे और सभी के लाभ के लिए धर्मचक्र प्रवर्तन होता रहेगा। इस कदम का उद्देश्य धर्म संस्था से किसी भी प्रकार के व्यावसायीकरण को दूर रखना है।

प्रथम वर्ष में धम्मगिरि

मैं धम्मगिरि के औपचारिक उद्घाटन के कुछ दिनों बाद, अक्टूबर 1976 में वहां पहुँचा। पहला दस दिवसीय शिविर चल रहा था और मुझे अगला शिविर प्रारंभ होने तक मदद करने के लिए कहा गया। मेरा पहला काम नए बाथरूम के टाइलों पर लगे कचरे को साफ करके सफेद करना और शांति पठार के चारों ओर के रास्ते (चंक्रमण भूमि) को साफ करना था। मैं यह जगह देखकर दंग रह गया। मैंने सोचा था कि मैं एक ऐसे नये केंद्र में जा रहा हूँ जो पूरी तरह से तैयार होगा। परंतु, यह मुझे एक कच्चा, अधूरा निर्माण स्थल लग रहा था। कुछ संरचनाएं अधूरी थीं और वे सभी मलबों से घिरी हुई थीं। केवल कुछ ही पेड़-पौधे अभी तक लगाए गए थे।

फिर भी, केंद्र में स्तंभित करने वाली सुंदरता थी। हर शाम जब गोयन्काजी भोजनालय के बगल वाले ध्यान कक्ष में हिंदी में प्रवचन देते, तब मैं बाहर बैठकर आसपास की पहाड़ियों की शोभा को निहारता रहता। धम्मगिरि का यह प्रारंभिक शिविर था, और नगर के बहुत से लोग प्रवचन सुनने के लिए आना चाहते थे। हॉल में उनके लिए जगह नहीं थी। इसलिए बाहर लाउडस्पीकर लगा दिया गया था और दरवाजों के सामने आम के पेड़ के नीचे कालीन बिछाये गए थे। हर शाम पचास से सौ लोग आते और वहां बैठते। वे सभी उम्र के पारंपरिक भारतीय पोशाक पहने हुए साधारण लोग थे। वे गोयन्काजी के शब्दों को ध्यान से सुनते, जैसे उनके पूर्वजों ने बुद्ध के प्रवचन सुने होंगे। प्रवचन के बाद अपने सोये हुए बच्चों को लेकर, अंधेरे में वे शीघ्रता से अपने घर लौट जाते।

मैंने नवंबर से शिविर में बैठना शुरू कर दिया, और 1977 की शुरुआत तक लगातार जारी रखा। मेरी योजना थी कि मैं मार्च तक शिविरों में बैठूंगा, और उसके बाद अपने जीवन को कहीं और जाने के लिए अपना रास्ता चुनूंगा। परंतु ऐसा नहीं हुआ। जनवरी से मुझे एक ब्रेक की बहुत जरूरत महसूस होने लगी और मैं छुट्टी पर जाने के बारे में सोचने लगा। मैं हमेशा ग्राहम गैम्बी का आभारी रहूंगा जिन्होंने मुझे धम्मगिरि में रुक कर सेवा देने के लिए प्रोत्साहित किया, और वह अनुभव मेरे लिए उतना ही लाभदायक था जितना कि शिविर में बैठना।

उस समय विपश्यना विश्व विद्यापीठ (वि.वि.वि.) में काम करने का अनुभव आज से थोड़ा अलग था। तब वहां कोई भारतीय नहीं थे और न ही दिन-प्रतिदिन के प्रबंधन का काम संभालने वाले कोई कर्मचारी थे। संगठित कार्यालय की प्रक्रियाएं भी बहुत कम थीं। एक समय में मैं एक साथ-

कार्यालय चलाना, टेलीफोन का जवाब देना, साधकों के साथ व्यवहार करना, मजदूरों और चौकीदारों का पर्यवेक्षण करना, छोटी नकदी को संभालना, पत्रों का जवाब देना, हिसाब-किताब रखना—इन सब के लिए जिम्मेदार था। और यह सब समताभाव के साथ मुस्कुराते हुए करना काफी बड़ी चुनौती थी, और मेरी असफलताओं ने मुझे उतना ही सिखाया जितना कि मेरी दुर्लभ सफलताओं ने। मुझे जल्दी ही एहसास हुआ कि मुझे धम्म के बारे में बहुत कुछ सीखना है, और मैंने वी.आई.ए. में अपने प्रवास को बढ़ाने का फैसला किया। अनिश्चित काल के लिए।

गर्मी का मौसम आते ही धम्मगिरि की पानी की समस्या और गंभीर हो गई। हमें नगरपालिका प्रणाली से जोड़ने वाली लाइन बाधित लग रही थी, और इसे साफ करने में बेहद देरी हो रही थी। गोयनकाजी ने मुझे इस विषय पर इगतपुरी नगर पालिका को एक पत्र लिखने के लिए कहा। मैंने लिखा कि अगर समस्या का समाधान जल्द नहीं हुआ, हमें साधना केंद्र को बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। पत्र भेजने से पहले मैंने गोयनकाजी को उनके अनुमोदन के लिए दिखाया। उन्होंने मुझे इसे बदलने का अनुदेश देते हुए कहा, "हमारा काम साधना केंद्र खोलना है। उन्हें बंद करना मारा [धम्म की विरोधी शक्तियों] का काम है।"

जून-77 मानसून की शुरुआत लेकर आया। शिविर बंद हो गए और धम्मगिरि में गिने-चुने लोग ही रह गए। कुछ ही दिनों में, सारी भूमि ताजे हरे रंग के कालीन से ढक गई और पहाड़ के चारों ओर से झरने बहने लगे। उस समय, यह स्थल मुझे धुंध में लिपटा हुआ और दुनिया से कटा हुआ, शांति के एक द्वीप जैसा प्रतीत हो रहा था। हममें से जो रुके थे, वे बारी-बारी से सेवा देते और स्वयं-शिविर में बैठते। गोयन्काजी के प्रोत्साहन से हमने पालि भाषा सीखना शुरू किया। शिविरों के दौरान हमने जिन गाथाओं को इतनी बार सुना था, आखिरकार उनके अर्थ को समझना प्रेरणादायी था। हर सप्ताहांत गोयन्काजी धम्मगिरि आते और हमारी कक्षा में उपस्थित होते थे। वे हमारी प्रगति से उतने ही प्रसन्न लगते, जितने कि हम थे। घंटों तक वे हमें धम्म समझाते और म्यंमा (म्यांमार) के अपने अनुभवों की कहानियां सुनाते थे।

धम्मगिरि के वे शुरुआती दिन मेरे लिए अविस्मरणीय हैं। उस समय इतने बीज बोए गए जो बाद के वर्षों में फल और हरियाली देने वाले थे।

जब मैं हर साल वी.आई.ए. में लौटता हूँ तब ये पेड़ ही हैं जो इस जगह के बदलाव को बहुत स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं। मुझे 1977 के मानसून के दौरान एक सुबह की बात याद है, जब कार्यालय के बाहर आम के पेड़ के नीचे एक छोटी-

सी जगह में ‘ओक’ के सौ बीज बोये गये थे। आज वे बीज स्थान-स्थान पर प्रत्येक बीस फुट लंबे पेड़ हैं और शांति पठार की सीमा बनाते हैं। मुझे याद है जब गेट से पुराने बंगलों तक के रास्ते के पेड़ मुश्किल से मेरे कंधे तक पहुँचे थे।

मुझे याद है जब मैं पहली बार यहां आया था, वह बर्मी बोधि वृक्ष (बरगद का पेड़) पुरुषों के निवास (डॉरमेटरीज) के बीच के बगीचे में इतना कमजोर था कि उसे एक लकड़ी का सहारा लेना पड़ता था। आज इसका तना इतना मोटा और सीधा है, जड़ें गहरी हैं और इसकी शाखाएं सुखद छाया दे रही हैं – मानो धम्मगिरि के विकास का एक दृश्यमान प्रतीक हो।

—बिल हार्ट, कनाडा

जैसे ही नव-स्थापित केंद्र सुचारु रूप से काम करने लगा, आगे उसके विस्तार के बारे में सोचना संभव हुआ। पहली प्राथमिकता ध्यान सुविधाओं में सुधार करते हुए शून्यागार प्रदान करना था जहां साधक एकांत में ध्यान कर सकें। तदनुसार, 1978 में शांति पठार पर पगोडा का निर्माण शुरू हुआ। इस परियोजना में भाग लेने के लिए पश्चिम से दर्जनों साधक विशेष रूप से धम्मगिरि आए। भारतीयों के साथ-साथ वे भी बढ़ई, राजमिस्त्री, बिजली मिस्त्री और सामान्य मजदूरों के रूप में अक्सर कठिनाई की स्थिति में काम करते थे। उनकी मदद से मार्च 1979 में पगोडा के पहले चरण का उद्घाटन करना संभव हुआ।

1978-1979 में धम्मगिरि

ट्रेन ठिठक कर रुक गई। मुझे और मॉरीन को भीड़ में से अपना सामान लेकर निकलने के लिए संघर्ष करना पड़ा और धक्का-मुक्की करते हुए, थके-हारे इगतपुरी स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर उतरे। रास्ते में छोटे-छोटे बच्चों के एक झुंड ने हमारा स्वागत किया। गन्ने से भरे मुँह से वे चिल्लाए, “तुम्हारा नाम क्या है?” और “मुझे एक मुहर दो!” ऊपर, काले कौवों के झुंड जोर-जोर से कांव-कांव कर रहे थे। दोपहर के भोजन की तैयारी के लिए हर घर व गली में से कोयले से जलने वाले चूल्हों के धुएं से हवा भरी हुई थी। जोरों से बजती हुई ट्रेन की सीटी, चमकीले ढंग से सजाए गए ट्रकों के ऊंचे-ऊंचे हॉर्न से मुकाबला कर रही थी। ट्रैफिक के शोर के साथ-साथ एक पुराने लाउड-स्पीकर के माध्यम से लोकप्रिय भारतीय संगीत की लगातार आती आवाज भी शामिल थी। ताज़े पिसते हुए मसालों की मीठी सुगंध भी हवा में फैली थी।

लोगों, बच्चों, गायों और बैलगाड़ियों से भरी गलियों से होते हुए हमने धम्मगिरि की लगभग बीस मिनट की दूरी

पैदल पूरी की। एक सूखे, धूलभरे रास्ते ने नगर को धम्मगिरि केंद्र से जोड़ रखा था।



प्रथम पगोडा के निर्माण में हो रहे विलंब को देखते हुए सभी साधकों ने मिल कर काम किया ताकि समय पर इसका उद्घाटन हो सके ॥

भौतिक रूप से धम्मगिरि कोई आलीशान होटल तो नहीं था, फिर भी यहां की सुविधाएं बुनियादी और पर्याप्त थीं। इमारतें मुख्य रूप से पत्थर और कंक्रीट की बनी थीं। फूस की लगभग पच्चीस झोपड़ियों ने वहां साधना करने के लिए आने वाले लोगों की बढ़ती संख्या को समायोजित करने में मदद की। जमीन नन्हें पेड़-पौधों से भरी हुई थी और एक हरे-भरे बगीचे की तरह सुसज्जित की गई थी। सूर्योदय और सूर्यास्त का समय विशेष रूप से सुंदर था, जब कि सूर्य का कोमल प्रकाश आसपास के सूखे पहाड़ों को उजागर करता था।

मॉरीन और मैं सर्दियों के मौसम के पहले दस-दिवसीय शिविर (1978-1979) में उत्सुकता से शामिल हो गए। बड़ा हॉल पश्चिमी और सभी वर्गों के भारतीयों के रोचक मिश्रण से खचाखच भरा हुआ था। शिविर के दौरान मैंने अपने दैनिक जीवन में साधना और इसके निहितार्थों की गहरी समझ को एक साथ जोड़ने का प्रयास किया। मैं और अधिक स्पष्ट रूप से समझने लगा कि यह सब एक साथ कैसे सम्मिलित होता है, तथा धर्म के व्यावहारिक और सैद्धांतिक पक्ष को अपने अनुभव से जान कर देख पाया। मैं जो सीख रहा था उसमें मुझे सादगी और सफाई दिख रही थी। धम्मगिरि का शक्तिशाली वातावरण अथक प्रयास करने के लिए बहुत अनुकूल था। वर्षों से अभ्यास कर रहे कई निष्ठावान साधकों की उपस्थिति ने हमें और प्रेरणा देने में मदद की।

पहले दस दिनों के अंत में, मॉरीन और मैंने फैसला किया कि हम एक और दस दिन का स्वयं-शिविर करेंगे। बीस दिनों के बाद हमें यकीन हो गया कि पूर्व की हमारी लंबी यात्रा सार्थक रही। हमने निश्चय किया कि अब हम धम्मगिरि में ही रुकेंगे।

यहां रहने का अर्थ था काम करना, चाहे आप साधना में बैठकर काम करें या केंद्र के कार्यों में मदद करें। मॉरीन को कार्यालय में काम करने का मौका मिला और मुझे पगोड़ा के निर्माण पर काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह एक पारंपरिक बर्मी पगोड़ा के आकार में कंक्रीट से बनी एक बड़ी, गोलाकार छत और अंदर एकांत में व्यक्तिगत ध्यान के लिए गुफा जैसे ध्यान-कक्ष गोलाकार पंक्तियों में बने हैं।

धम्मगिरि में रहने से हमें गंभीरता से ध्यान करने और धर्म में और अधिक स्थापित होने तथा सेवा देने का आदर्श वातावरण मिला। बारी-बारी से ध्यान और सेवा की अवधि ने एक उत्कृष्ट संतुलन बनाए रखा।

छह महीनों के उपरांत, इगतपुरी के चहल-पहल वाले नगर से होते हुए उस धूल भरे रस्ते पर चल कर हम वापस रेल्वे स्टेशन लौटे। हम दोनों ने श्री गोयन्काजी के लिए एक गहरा आदर महसूस किया, जो धर्म के सिद्धांत तथा व्यवहार दोनों के इतने प्रबल उदाहरण थे।

—ब्रूस स्टुवर्ट, न्यूजीलैंड/यू.एस.ए.

प्रारंभ में साधकों को अक्सर शून्यागार बांटने पड़ते थे, क्योंकि पहले चरण में पगोड़ा में केवल बत्तीस शून्यागार थे। कभी-कभी एक शून्यागार में छह या सात साधक एक साथ बैठ जाते थे।

हर साल अधिक शून्यागारों का निर्माण किया गया और अब पगोड़ा में 200 से अधिक शून्यागार हैं। 1980 में पगोड़ा के बगल में एक बड़ा धम्म हॉल बनाया गया। साथ ही आवासीय सुविधाओं का विस्तार और उनमें सुधार किया गया है। हाल ही में एक दूसरा धम्म हॉल और बन गया। धम्मगिरि के परिसर को हरित क्षेत्र बनाने के लिए व्यापक वृक्षारोपण भी किया गया है। इस साल एक बड़ी पानी की टंकी बनकर तैयार हुई और प्रयोग के तौर पर जलाशय बनाने के लिए एक बांध बनाया गया है। विपश्यना विशोधन विन्यास संस्था के तत्वावधान में एक प्रिंटिंग प्रेस की भी स्थापना की गई है और प्रतिवर्ष एक साल के पालि कोर्स का आयोजन किया जा रहा है।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण विकास ईंटों और कंक्रीट आदि में ही नहीं हुआ बल्कि साल दर साल धम्मगिरि में धर्म का वातावरण मजबूत होता रहा है। जैसे ही साधकों को एकांत में रहने और ध्यान करने की सुविधा बढ़ी तो श्री गोयन्काजी



भारत में प्रथम पगोड़ा के उद्घाटन समारोह में पूज्य गुरुजी का सार्वजनिक प्रवचन, जिसमें गांव के लोग भी आमंत्रित थे।

ने केंद्र में तीस दिवसीय शिविर संचालित करना शुरू कर दिया। 1987 के प्रारंभ में एक अधिक लंबे शिविर की योजना बनाई गई है। जो लोग विद्यापीठ में आते हैं, उन्हें अत्यधिक अनुकूल वातावरण में गंभीरता से, गहन साधना करते हुए मुक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने का सुअवसर मिलता है। आज यह अनूठा केंद्र इस बात का अद्भुत उदाहरण है कि परिश्रम और धर्म के बल से क्या नहीं किया जा सकता। विपश्यना साधना दुनिया भर के साधकों को अभ्यास करने के लिए परिपूर्ण समर्थन और प्रेरणा देती है।



प्रथम पगोड़ा को नीचे से ऊपर तक ढकते हुए बने विशाल पगोड़ा में कुल 322 शून्यागार हैं और 200 नये शून्यागार अलग से बने हैं।

निम्नलिखित अंश 1979 में पूज्य गुरुजी श्री गोयन्काजी द्वारा विपश्यना के आचार्य के रूप में उनके दस वर्ष पूरा करने के अवसर पर लिखे गए एक लेख से लिया गया है:—

.... पिछले दस वर्षों में विपश्यना के प्रसार के लिए जो काम किया गया है, उसका मैं अवमूल्यन नहीं करता, क्योंकि ऐसा करना इतने लोगों द्वारा दी गई निस्स्वार्थ सेवा का अवमूल्यन करना होगा। परंतु सच्चाई यह है कि अभी तक इस काम में केवल पहला और एक छोटा-सा कदम उठाया गया है। भारत में एक मजबूत आधार बनाकर, विपश्यना का प्रकाश दुनिया भर में फैलना चाहिए।

यह जीवन भर का काम है। यह पहाड़ की खड़ी चढ़ाई

है। रास्ते में भीतर और बाहर की कई बाधाएँ और रुकावटें हैं। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए धर्म की महान शक्ति, दृढ़ता, सहनशीलता, उत्साह और अहंकारहीनता की आवश्यकता है।

कई बार जब बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, तब मैं पाता हूँ कि मैं उनके वजन के नीचे दब गया हूँ। लेकिन जल्द ही अपने घुटनों से धूल झाड़कर खड़ा हो जाता हूँ और धर्म बल के साथ फिर चलना शुरू कर देता हूँ। यात्रा का जो भी हिस्सा पूरा हुआ है, वह चलते रहने की प्रेरणा और शक्ति देता है तथा कृतज्ञता का भाव मार्ग में सबसे बड़ी सहायता प्रदान करता है। यह आगे की यात्रा के लिए ऊर्जा देता है।

इसलिए मेरे मन में कृतज्ञता उमड़ती रहती है। सबसे पहले उस बुद्ध के प्रति जिसने इस खोई हुई विद्या को खोज निकाला और न केवल अपने कल्याण के लिए इसका उपयोग किया, बल्कि लोक-कल्याण के लिए इसे मुक्त-हस्त और करुण-चित्त से वितरित किया। मैं बुद्ध से लेकर सयाजी ऊ बा खिन तक के सभी आचार्यों की श्रृंखला का आभारी हूँ, जिन्होंने इस अद्भुत विद्या को अपने शुद्ध रूप में संभालकर रखा, जिससे मुझे इसे सीखने का अवसर मिला। मैं अपने परिवार के सभी सदस्यों का आभारी हूँ जिनका सहयोग धर्म-सेवा में इतना सहायक रहा है। मैं अपने सभी धर्म-साथियों और मित्रों का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे अपना सहयोग और सहायता दी, जिनके साथ ने मुझे धर्मपथ पर चलने की ऊर्जा दी है। यदि इन पिछले दस वर्षों के दौरान मैंने अपने शरीर, वाणी या मन के कर्मों से जाने-अनजाने में, किसी के प्रति कुछ गलत किया है, तो मैं क्षमा चाहता हूँ।

सबका मंगल हो! सबका कल्याण हो! सबकी स्वस्ति मुक्ति हो!

कल्याण मित्र,
सत्यनारायण गोयन्का.

00000000000000000000000000000000

नये उत्तरदायित्व

1. श्री प्रेमनारायण शर्मा (व.स.आ.),
धम्मनाग के केंद्र आचार्य के रूप में सेवा

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री प्रह्लाद तरिगोप्पुला, हैदराबाद
2. श्री लिंगैयाह चेरुपल्ली, नालगोंडा (तेलंगाना)
3. श्री नारायण भराडे, औरंगाबाद
4. श्रीमती सुरेखा शिलेवंत, डोबीवली (पूर्व)
- 5-6. श्री बृज मोहन एवं श्रीमती सरिता वर्मा,
करनाल (हरियाणा)

7. श्री मुकुंद शेकतकर, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

8. Mr. Wilson Chen, Taiwan.

9. Miss Nittaya Namsatean, Thailand

बालशिविर शिक्षक

1. श्रीमती जयश्री निशांत भोयर भंडारा
2. श्रीमती भाग्यश्री डोंगरे भंडारा
3. श्री अविनाश साखरे भंडारा
4. सुश्री संगीता मेश्राम भंडारा
5. श्री प्रशांत मेश्राम नागपुर
6. श्री हर्षल दोशी मुंबई
7. श्री प्रीतम नागराले मुंबई
8. Dr Kata Kerényi, Hungary, urope

मंगल मृत्यु

1. भुज-कच्छ निवासिनी श्रीमती कमलाबेन, श्री जयंतिलाल ठक्कर के साथ कंधे-से-कंधा मिला कर धर्मकार्य में सदैव सहयोगिनी बनी रहीं। अनेकों शिविरों का संचालन करने के साथ ये दोनों ‘धम्मअम्बिका’ विपश्यना केंद्र (द.गुजरात) के केंद्रीय आचार्य बने और इस क्षेत्र के

क्षेत्रीय आचार्य भी। श्री जयंतिलालजी ने लिखा है, “शुद्ध धर्म ने मुझे अपने चर्म-चक्षु से 22 मई, 2022 को उन्हें शांतिपूर्वक इस संसार को छोड़ते देखने का अवसर प्रदान किया है। हम सभी उन्हें धर्मपथ पर प्रगति के लिए मंगल मैत्री दें।”

2. कनाडा निवासी विपश्यनाचार्य श्री नारायणदास सापरिया ने 16 मई, 2022 को 92 वर्ष की पकी उम्र में शांतिपूर्वक शरीर त्याग किया। जीवन के अंतिम क्षण तक उनकी धर्म प्रसारण की प्रबल इच्छा बहुत प्रेरणाजनक रही और लंदन में विपश्यना केंद्र स्थापित करने में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे धर्मपथ पर उत्तरोत्तर आगे बढ़ते रहें।

3. नवसारी के वरिष्ठ सहायक आचार्य एवं वास्तुकला के मर्मज्ञ श्री ठाकोरभाई पारेख ने 15 मई 2022 को शांतिपूर्वक शरीर त्याग किया। उन्होंने अनेक शिविरों का संचालन करने के साथ अनेक केंद्रों के लिए नक्शे आदि बना कर निर्माणकार्य में बहुत सहयोग दिया। उनके पुण्यकार्यों के फलस्वरूप धम्मपथ पर उनकी सतत प्रगति होती रहे, धम्म परिवार की यही मंगल कामना है।

4. विपश्यनाचार्य श्री निरिंद छायोडम (84) का रविवार, 5 जून, 2022 को बैंकॉक के एक अस्पताल में निधन हो गया। श्री निरिंद छायोडम को 1995 में स.आ. और 1998 में आचार्य नियुक्त किया गया था। उन्होंने 30 से अधिक वर्षों तक थाईलैंड के धर्म कार्य में श्री गोयन्काजी की मदद में प्रमुख भूमिका निभाई। श्री गोयन्काजी ने उन्हें थाई भाषा में सभी निर्देशों और प्रवचनों को रिकॉर्ड करने के लिए चुना।

अपनी पत्नी, आचार्य सुल्थी और अन्य पुराने साधकों के साथ उन्होंने थाईलैंड में अधिकृत धर्म ट्रस्ट की स्थापना के साथ भूमि खोजने और थाईलैंड का पहला विपश्यना केंद्र बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई। वास्तुकार श्री निरिंद ने कई अन्य केंद्रों की रचना और निर्माणकार्यों का समन्वय किया। वे एक करुणामय और उत्साही व्यक्ति थे जिन्होंने हमेशा धर्म सेवकों की देखभाल का विशेष ध्यान रखा। अपने आखिरी वर्षों में कमजोर स्वास्थ्य ने उन्हें धर्मक्षेत्र की गतिविधियों में सक्रिय भूमिका से हटने के लिए मजबूर किया। धर्मपथ पर उनकी उत्तरोत्तर प्रगति की मंगल कामना।

मुंबई में विपश्यना का नया परिसर

‘धम्मपत्तन विपश्यना केंद्र’ के तत्त्वावधान में मुंबई के गोरगांव (पूर्व) में शिविर लगने लायक एक नया स्थान (परिसर) उपलब्ध हुआ है जहां सितंबर 2021 से विपश्यना का काम आरंभ हो गया है। यह एक 5 मंजिला इमारत है और इसका क्षेत्रफल 11,000 वर्ग फुट है। इसे धम्मपत्तन विपश्यना ट्रस्ट के अंतर्गत- ‘गोरगांव विपश्यना केंद्र’ कहा गया है।

सुविधाओं में 5वीं मंजिल पर एक वातानुकूलित धम्म हॉल, तीसरी और चौथी मंजिल पर निवास के लिए पदों से विभाजित बड़े-बड़े कक्ष (डारमेटरीज) हैं, तथा प्रत्येक मंजिल पर कॉमन लेकिन पर्याप्त संख्या में शौचालय एवं स्नानागार की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

यह स्थल पश्चिमोत्तर मुंबई के साधकों के लिए बहुत उपयुक्त है। लोग यहां दैनिक या साप्ताहिक सामूहिक साधनाओं में आसानी से भाग ले सकेंगे और एक-दिवसीय एवं 3-दिवसीय शिविरों का लाभ ले सकेंगे। यहां पहला 10-दिवसीय शिविर 28 अप्रैल से 9 मई 2022 तक सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इसके वर्षभर के शिविर-कार्यक्रमों की सूची नीचे दी गई है।

इस परिसर की सुविधाओं में सुधार के लिए कुछ और निर्माणकार्यों की योजना है। इनमें भूमि-तल पर एक स्वतंत्र रसोईघर, शिविर-कार्यालय, शौचालय के साथ कुछ अलग-अलग कमरे तथा भू-तल पर बाहर के विपश्यी साधकों के लिए सुबह 6 से सायं 9 बजे तक खुला रहने वाला एक ध्यान-कक्ष, पुरुष तथा महिलाओं के लिए अलग-अलग (अतिरिक्त) लिफ्ट और सीढ़ियां भी शामिल हैं।

इस योजना के लिए दान निम्नलिखित नाम व खाते में भेज सकते हैं,

जिसका विवरण ईमेल— info.gvc@vridhamma.org से अवश्य भेजे ताकि रसीदें भेजी जा सकें :—

‘Dhamma Pattana Vipassana Trust’,
A/C. Goregaon Centre,
Axis Bank Ltd., Malad (west) branch,
A/C No. 921010040391149,
IFSC UTIB0000062, Mumbai.

धम्मपत्तन विपस्सना ट्रस्ट के अंतर्गत ‘गोरेगांव विपश्यना केंद्र’ के बारे में अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए कृपया इस लिंक पर जायें— gvc.vridhamma.org अथवा हार्दसऐप नं. +91 84549 27150 पर संदेश भेजें।

‘गोरेगांव विपश्यना केंद्र’ के भावी कार्यक्रम

तीन दिवसीय— केवल पुरुष: 30-6 से 3-7-22, 4 से 7-8, 17 से 20-11,

केवल महिला: 8 से 11-9, 13 से 16-10. **दस दिवसीय:—**

केवल पुरुष: 13 से 24-7-22, 21-9 से 2-10, 30-11 से 11-12-22.

केवल महिला: 17 से 28-10, 26-10 से 6-11, 21-12 से 1-1-2023.

000000000000000000000000000000

बुद्ध-पूर्णिमा पर एक दिवसीय शिविरों का सफल आयोजन

1. 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' में लंबे प्रतिबंधों के बाद 15 मई, 2022 को बुद्ध पूर्णिमा के उपलक्ष्य में एक-दिवसीय महाशिविर का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ जिसमें लगभग 3000 साधकों ने भाग लिया। शिविर के अंत का सार्वजनिक प्रवचन सुनने के लिए भी लगभग 300 लोग आये।

2. इसी प्रकार पटना के विपश्यना केंद्र— ‘धम्मपाटलिपुत्त’ में भी एक दिवसीय शिविर में लगभग 150 लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नितीश कुमार ने अपने कुछ मंत्रियों के साथ पधार कर धम्मकक्ष में आनापान की साधना का अभ्यास किया। उन्होंने लोगों को संबोधित किया कि अधिक से अधिक लोग विपश्यना शिविरों में सम्मिलित होकर इस सुविधा का लाभ उठाएं। सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों को सवैतनिक अवकाश की सुविधा पहले से ही दी हुई है। उनका इस प्रकार का केंद्र पर आगमन लोगों को बहुत सुखद लगा।

3. ऐसे ही अन्य अनेक स्थानों से एक दिवसीय शिविरों का समाचार मिला है तथा अनेक स्थानों पर ऑनलाइन शिविरों एवं सामूहिक साधनाओं का आयोजन हुआ। धर्म खूब जोरों से फैले, सब का मंगल हो!

000000000000000000000000000000

अति महत्त्वपूर्ण सूचनाएं

1. सेंट्रल आईवीआर (इंटरैक्टिव वॉयस रिस्पॉन्स) संभाषण नंबर: 022-50505051 आवेदक इस नंबर पर अपने पंजीकृत मोबाइल नंबर (फॉर्म में उल्लिखित नंबर) से अपनी शिविर पंजीकरण स्थिति की जांच करने, रद्द करने, स्थानांतरित करने या किसी भी केंद्र पर बुक किए गए अपने आवेदन की पुष्टि करने के लिए कॉल कर सकते हैं। वे इस सिस्टम के जरिए केंद्र से संपर्क भी कर सकते हैं। यह भारत के सभी विपश्यना केंद्रों के लिए एक केंद्रीय संपर्क नंबर है।

2. यदि अकेंद्रीय (नान-सेंटर) भावी शिविरों के कार्यक्रम पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेजना चाहते हैं तो कृपया अपने समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य (सीपीटी) की सहमति-पत्र के साथ भेजें, जबकि स्थापित केंद्रों के कार्यक्रम केंद्रीय आचार्य (सीटी) की सहमति-पत्र के साथ आने चाहिए। इसके बिना हम कोई भी कार्यक्रम पत्रिका में प्रकाशित नहीं कर सकते हैं।

000000000000000000000000000000

ऑनलाइन भावी शिविर कार्यक्रम एवं आवेदन

सभी भावी शिविरों की जानकारी नेट पर निम्न लिंक पर उपलब्ध है। सभी प्रकार की बुकिंग ऑनलाइन ही हो रही है। अतः आप लोगों से निवेदन है कि धम्मगिरि के लिए निम्न लिंक पर चेक करें और अपने उपयुक्त शिविर के लिए अथवा सेवा के लिए सीधे ऑनलाइन आवेदन करें:

<https://www.dhamma.org/en/schedules/schgiri>

विश्वभर के सभी भावी शिविरों की जानकारी एवं आवेदन के लिए:

<https://schedule.vridhamma.org> एवं www.dhamma.org

अथवा निम्न लिंक भी देखें--

<https://www.dhamma.org/en-US/locations/directory#IN>

हिंदी वेबसाइट हेतु लिंक: www.hindi.dhamma.org

000000000000000000000000000000

विपश्यना पत्रिका संबंधी आवश्यक सूचना

आगामी जुलाई महीने में विपश्यना पत्रिका का 52वां वर्ष आरंभ हो रहा है। पिछले लगभग दो वर्ष से पत्रिका का प्रकाशन केवल ऑनलाइन ही चल रहा था। अब जुलाई महीने से छपना पुनः प्रारंभ हो रहा है। परंतु पेपर आदि सभी की लागत इतनी बढ़ गयी है कि दोगुने से भी अधिक खर्च आ रहा है। अतः निम्न प्रकार से परिवर्तन किया जा रहा है।

1. पत्रिका अब आठ पृष्ठों की न होकर, मुख्य लेख और आवश्यक सूचनाओं के साथ केवल चार पृष्ठों में छपेगी। हर तीसरे महीने (त्रैमासिक) मुख्य लेख के साथ कार्यक्रम आदि 8 पृष्ठों में छपेंगे।
2. इस प्रकार वर्ष में दो बार भावी शिविर कार्यक्रम छपेंगे और शेष दो अंकों में सामूहिक साधनाएं, एक दिवसीय शिविर एवं प्रकाशन संबंधी अन्य सूचनाएं छपेगी।
3. कृपया साधक इन्हें अपने पास संभाल कर रखें ताकि साल भर काम आयें और दुबारा किसी से पूछने की आवश्यकता न पड़े। अधिक जानकारी हेतु नीचे लिखी ‘ऑनलाइन भावी शिविर कार्यक्रम एवं आवेदन’ की लिंक्स देखें।
4. पत्रिका का वार्षिक शुल्क रु. 30/- से बढ़ा कर रु. 100/- किया जा रहा है। नये आजीवन सदस्य नहीं बनाये जायेंगे, लेकिन पहले से जो आजीवन सदस्य हैं उनकी पत्रिका जाती रहेगी।
5. ऑनलाइन सभी अंक पूर्ववत् उपलब्ध रहेंगे (उपरोक्त क्रमानुसार)।
6. ऑनलाइन शिविरों की बुकिंग जारी रहेगी। इसके लिए पत्रिका के हर अंक में सूचनाएं छप रही हैं। कृपया ध्यान से पढ़ें और उनका उपयोग करें।

विपश्यना विशोधन विन्यास

विपश्यना विशोधन विन्यास (Vipassana Research Institute=VRI) एक ऐसी संस्था है जो साधकों के लिए धर्म संबंधी प्रेरणादायक पाठ्य सामग्री लागत मूल्य पर उपलब्ध कराती है। यहां का सारा साहित्य न्यूनतम कीमत पर उपलब्ध है ताकि अधिक से अधिक साधक इसका व्यावहारिक लाभ उठा सकें। विपश्यना साधना संबंधी अमूल्य साहित्य का हिंदी, अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद एवं शोध करना है। इसके लिए विद्वानों की आवश्यकता है। शोध कार्य मुंबई के इस पते पर होता है:- ‘विपश्यना विशोधन विन्यास’, परियत्ति भवन, विश्व विपश्यना पगोडा परिसर, एस्सेल वर्ल्ड के पास, गोराई गांव, बोरीवली पश्चिम, मुंबई- 400 091, महाराष्ट्र, भारत. फोन: कार्या. +9122 50427560, मो. (Whats App) +91 9619234126.

इसके अतिरिक्त VRI हिंदी, अंग्रेजी एवं मराठी की मासिक पत्रिकाओं के माध्यम से पूज्य गुरुजी के द्वारा हुए पत्राचार, पुराने ज्ञानवर्धक लेख, दोहे, साक्षात्कार, प्रश्नोत्तर आदि के द्वारा प्रेरणाजनक संस्मरणों को प्रकाशित करती है ताकि साधकों की धर्मपथ पर उत्तरोत्तर प्रगति होती रहे।

इन सब कार्यों को आगे जारी रखने के लिए साधकों का सहयोग अत्यंत आवश्यक है। भविष्य में अनेक साधकों के लाभार्थ धर्म की वाणी का प्रकाशन अनवरत चलता रहे, इसमें सहयोग के इच्छुक साधक निम्न पते पर संपर्क करें। इस संस्था में दानियों के लिए सरकार से आयकर अधिनियम 1961 की धारा 35-(1) (iii) के नियमानुसार 100% आयकर की छूट प्राप्त है। साधक इसका लाभ उठा सकते हैं। दान के लिए बैंक विवरण इस प्रकार है:—

विपश्यना विशोधन विन्यास, ऐक्सिस बैंक लि., मालाड (प.)

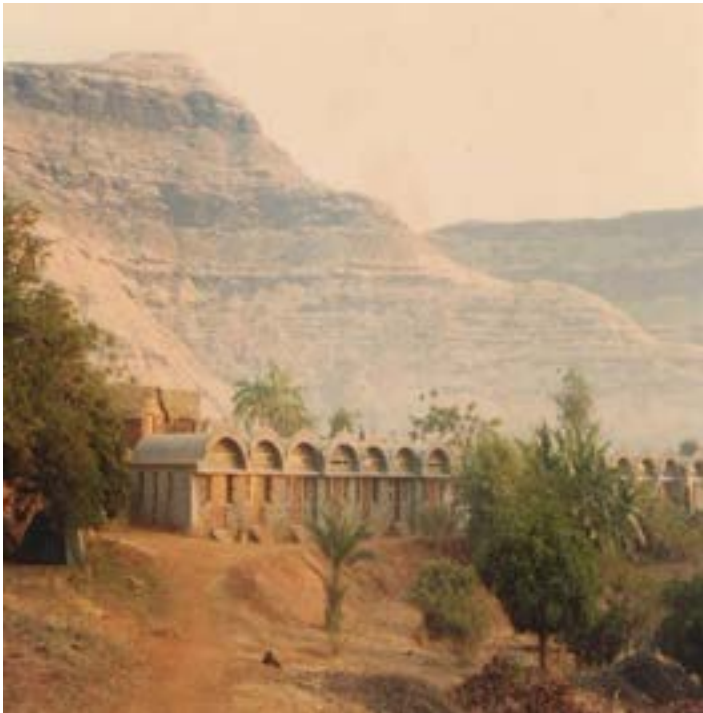
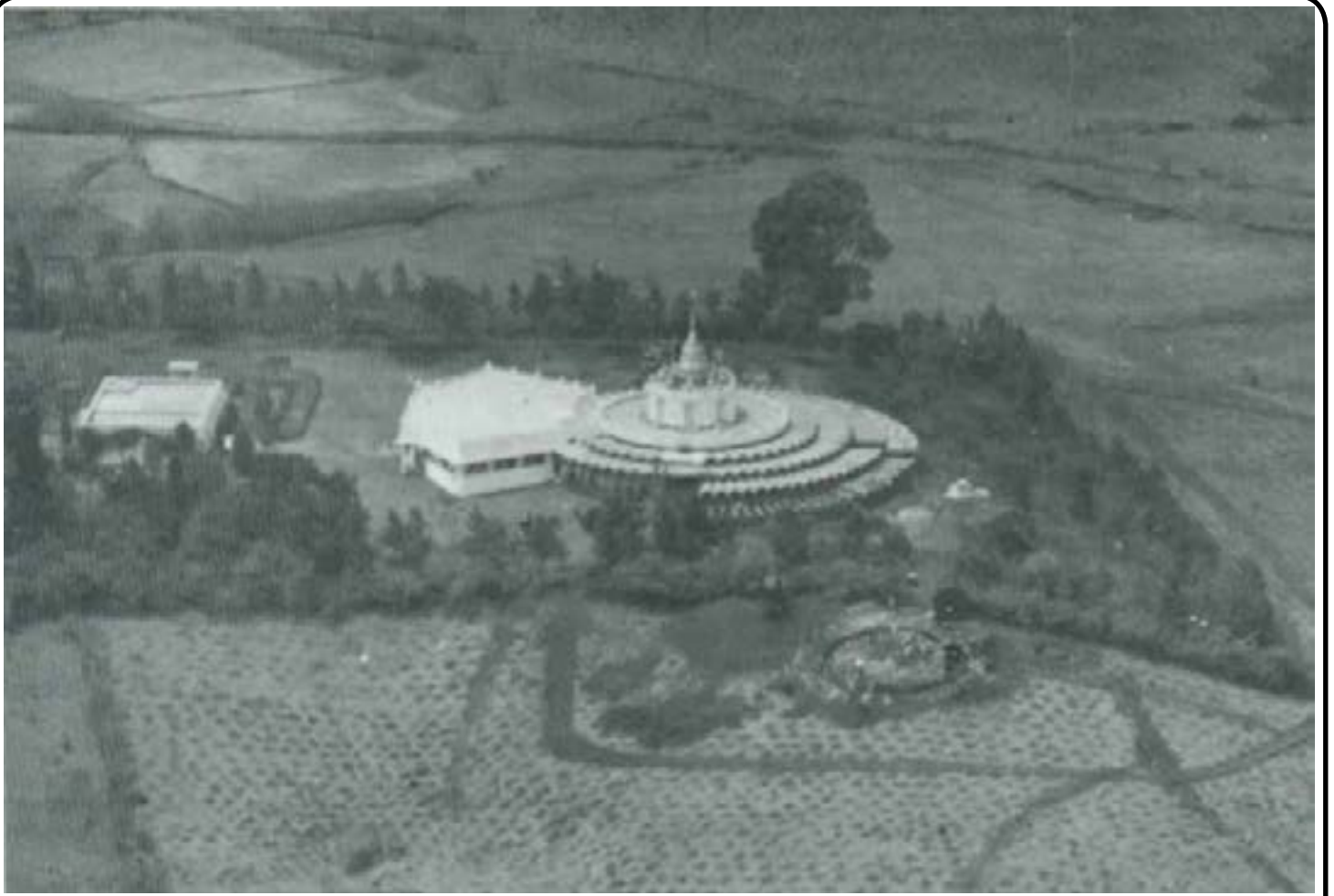
खाता क्र. 911010004132846; IFSC Code: UTIB0000062

संपर्क- 1. श्री डेरिक पेगाडो - 022-50427512/ 28451204

2. श्री बिपिन मेहता - 022-50427510/ 9920052156

3. ईमेल - audits@globalpagoda.org

4. वेबसाइट- <https://www.vridhamma.org/donate-online>



फोटो: घड़ी के क्रमानुसार:

1. शांतिपठार पर मध्य में नवनिर्मित धम्मकक्ष, उसके बाईं ओर आचार्य-निवास तथा दाहिनी ओर पगोडा दिखायी दे रहा है। बिल्कुल सामने नये धम्मकक्ष (नं. 2) की नींव खुदी हुई है और उसके आस-पास बहुत से छोटे-छोटे गड्ढे पेड़ लगवाने के लिए गुरुजी ने खुदवाये थे (1984).
2. दाहिनी ओर नीचे पहाड़ों की गोद में मणि (रत्न) की भांति चमकता हुआ धम्मगिरि (1985).
3. साधकों के लिए नव निर्मित शौचालय-युक्त एकाकी निवास (1986).

विपश्यना पगोडा परिचालनार्थ “संचुरीज कॉर्पस फंड”

‘ग्लोबल विपश्यना पगोडा’ के दैनिक खर्च को संभालने के लिए पूज्य गुरुजी के निर्देशन में एक ‘संचुरीज कॉर्पस फंड’ की नींव डाली जा चुकी है। उनके इस महान संकल्प को परिपूर्ण करने के लिए यदि 1,39,000 लोग, प्रत्येक व्यक्ति रु. 9000/- जमा कर दें, तो 125 करोड़ रु. हो जायेंगे और उसके मासिक ब्याज से यह खर्च पूरा होने लगेगा। यदि कोई एक साथ पूरी राशि नहीं जमा कर सकें तो किस्तों में भेजें अथवा अपनी सुविधानुसार छोटी-बड़ी कोई भी राशि भेज कर पुण्यलाभी हो सकते हैं।

साधक तथा बिन-साधक सभी दानियों को सहस्राब्दियों तक अपने धर्मदान की पारमी बढ़ाने का यह एक सुखद सुअवसर है। अधिक जानकारी तथा निधि भेजने हेतु --

संपर्क:- 1. Mr. Derik Pegado, 9920447110. or

2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156,

A/c. Office: 022-50427512 / 50427510;

Email- audits@globalpagoda.org;

Bank Details: ‘Global Vipassana Foundation’ (GVF),

Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments,

Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064,

Branch- Malad (W).

Bank A/c No.- 911010032397802;

IFSC No.- UTIB0000062;

Swift code: AXIS-INBB062.

Online Donation- <https://www.globalpagoda.org/donate-online>

दोहे धर्म के

धम्मगिरि से धर्म की, गंग प्रवाहित होय।
रोग शोक सबके मिटें, मुक्ति दुखों से होय ॥
तपोभूमि से धरम की, गंग प्रवाहित होय।
जन-जन का होवे भला, जन-जन मङ्गल होय ॥
सुख छाये संसार में, दुखिया रहे न कोय।
सब के मन जागे धरम, सब का मंगल होय ॥
सुख छाए इस जगत में, दुखिया रहे न कोय।
जन-जन मन मैत्री जगे, जन-जन मंगल होय ॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड

8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018

फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166

Email: arun@chemito.net

की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

धरती पर फिर धरम री, मंगळ बरसा होय।
साप ताप सैं रा धुलै, जन जन सुखिया होय ॥
द्रोह छोड़ मैत्री करै, क्रोध छोड़ कर प्यार।
सुद्ध धरम ऐसो जगै, सुधरै जग ब्यवहार ॥
फिर स्यू जागै जगत मँह, विपस्सना री जोत।
सब रो मंगळ ही सधै, कुळ छांटै ना गोत ॥
फिर स्यू जागै धरम री, बाणी मंगळ मूल।
जन जन रो हित सुख सधै, मिटै दुक्ख भव सूळ ॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी

सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरशदादा जैन शापिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877 मोबा.09423187301,

Email: morolium_jal@yahoo.co.in

की मंगल कामनाओं सहित

“विपश्यना विशोधन विन्यास” के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.

मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2566, ज्येष्ठ पूर्णिमा, 14 जून, 2022

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, Posting outside of India: US \$ 50. “विपश्यना” रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- Purnima of Every Month, Posted at Igatpuri-422 403, Dist. Nashik (M.S.) (फुटकर बिक्री नहीं होती)

DATE OF PRINTING: (on-line-edition),

DATE OF PUBLICATION: 14 JUNE, 2022

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403

जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत

फोन : (02553) 244076, 244086,

244144, 244440.

Email: vri_admin@vridhamma.org;

Course booking: info.giri@vridhamma.org

Website: <https://www.vridhamma.org>